विचार बिन्दु

नेकी से विमुख हो बदी करना निस्संदेह बुरा है। मगर सामने मुस्काना और पीछे चुगली करना और भी बुरा है। –संत तिरुवल्लुवर

आयुर्वेदाचार्यों के ज्ञान को प्राथमिकता दीजिये

इंटरनेट ने आयुर्वेद पर समाचारों, सूचनाओं और नुस्खों का ऐसा विशाल बाज़ार खड़ा कर दिया है कि आप उससे बच नहीं सकते। वस्तुत: इन्टरनेट, ब्लॉगिंग और सोशल मीडिया द्वारा उत्पादित भीड़-ज्ञान ने पत्रकारिता का ऐसा लोकतंत्रीककरण किया है कि भीड़ोत्पादित इस ज्ञान में प्रमाण-आधार की खोज बहुत कठिन होती जा रही है। विशेषकर, औषधियों के चमत्कारी प्रभाव का दुष्प्रचार आयुर्वेद की प्रमाण-आधारित विश्वसनीयता का सबसे बड़ा दुश्मन है। आज की चर्चा का मूल उद्देश्य यह बताना है कि जब सोशल-मीडिया द्वारा उत्पादित भीड़-ज्ञान आयुर्वेद के यथार्थ-ज्ञान को लील रहा हो तो आयुर्वेदाचार्यों का सहारा लेना ही उचित और कल्याणकारी होता है।

इन्टरनेट ने विशाल जनसंख्या के मध्य उपलब्ध दृष्टिकोणों की विविधता को लोगों तक पहुँचाने का अभूतपूर्व कार्य किया है। यह कार्य अकेले कोई भी मीडिया मानव इतिहास में कभी नहीं कर पाया था। लेकिन, इन्टरनेट दुधारी तलवार है। स्वार्थवादियों द्वारा जानबूझकर स्वहितसाधक सनसनीखेज झूठ और सूचनाओं के प्रचार का एक सर्वोत्तम वैश्विक मंच भी आज इन्टरनेट के रूप में मिल गया है। स्वास्थ्य लाभ के लिये वैज्ञानिक जानकारी युक्तिव्यपाश्रयी चिकित्सकीय योगों के निर्धारण में आवश्यक है। लेकिन सर्वश्रेष्ठ क्या है, इसकी आम लोगों द्वारा गलत व्याख्या कर लेने का खतरा तब और भी अधिक बढ़ जाता है जब साँच-झूठ बराबर लोकप्रिय हो रहे होते हैं। यह समस्या आज इसलिये भी बढ़ गयी है क्योंकि भगदड़ वाली जीवनशैली के कारण प्रकाशित सामग्री की सटीकता और सुस्पष्टता सुनिश्चित करने के लिये समय का अभाव है।

आयुर्वेद चमत्कार नहीं अपितु आहार, विहार, रसायन और औषधियों का का सम्पूर्ण जीवनोपयोगी विज्ञान है। आजकल सोशल मीडिया और विज्ञापनों में आयुर्वेद के ऐसे नुस्खों का भीड़ है जो रामबाण, चमत्कारी, शर्तिया, अचूक, गुप्त इलाज़ आदि नाम से बिक रहे हैं। साथ में प्रलोभन यह भी रहता है कि लाभ न मिले तो पैसा वापस लीजिये। इन लोक-लुभावन परन्तु भ्रामक और अवैज्ञानिक दावों ने एक ओर आम आदमी को असमंजस में डाल रखा है, वहीं दूसरी ओर इन्हें बनाने और बेचने वाले चाँदी काट रहे हैं। आयुर्वैदिक औषधियों के संदर्भ में इस प्रकार के दावों से आयुर्वेद का जितना नुकसान हुआ है, उतना शायद ही कभी और हुआ हो।

वैसे तो शिक्षा के प्रसार के साथ ऐसे दावों के प्रति आमजन में संदेह और सजगता बढ़ी है, लेकिन इस व्यक्तिगत संदेह ने समूची आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को ही संदेहास्पद बनाना शुरू कर दिया है।

समस्या का केवल एक ही निदान है कि आप ऐसी जानकारी पर भरोसा कर लेने के बजाय उत्तम आयुर्वेदाचार्य की सलाह लीजिये। ख्याल रखिये, जिन लोगों द्वारा चमत्कार के दावे किये जाते हैं, उनका प्राय: आयुर्वेद से धन कमाने के अतिरिक्त और कोई लेना-देना नहीं रहता है।

गलाकाट प्रतिस्पर्धा में भिड़ी हुई फार्मेसियाँ बाकी कसर निकाल देती हैं जो उनकी औषधियों के चमत्कारी होने का दावा करती हैं। उदाहरण के लिये, चार राज्यों में आयुर्वेद की औषधियाँ बेचने वाली कुछ दुकानों में सबसे महंगी आयुर्वेदिक औषधि की उपलब्धता पूछे जाने पर उत्तर में जिन औषधियों के नाम आये, उनमें सबसे विस्मयकारी तो एक ऐसा रसायन मिला जिसके आधा किलोग्राम वजन वाले डिब्बे की कीमत 9900 रुपये से अधिक थी। इसके अलावा सैक्स और ब्यूटी के बाजार में आयुर्वेद के नाम पर कई गोपनीय औषधियाँ भी छायी हुई हैं, जो 5000 से 7000 रुपये प्रति पैक धड़ल्ले से बिकती हैं। जाने-अनजाने कई वास्तविक आयुर्वेदाचार्य भी गलती कर बैठते हैं, जब रोगी को परामर्श व औषधि-निर्धारण करते हुये प्राय: यह कह देते हैं कि इस औषधि का इस रोग में चमत्कारी प्रभाव है।

एक बार पुन: यह बताना आवश्यक है कि चमत्कार और विज्ञान का आपस में पुश्तैनी बैर है। चमत्कार के लिये कारण और प्रभाव को स्थापित करने की कोई सार्वभौमिक, सैद्धान्तिक या प्रायोगिक बाध्यता नहीं है। ड्रग एंड मैजिक रेमेडीज (ऑब्जेक्श्नेबल एडवरटाईजमेंट) एक्ट,1954 ऐसी औषधियों के विज्ञापनों का निषेध करता है, जो चमत्कारी प्रभाव का दावा करती हैं। यह एक संज्ञेय या हस्तक्षेप्य अपराध है। तात्पर्य यह हुआ कि ऐसे प्रकरण में पुलिस बिना किसी न्यायालय की अनुमति के दखल कर सकती है। ऐसी 54 बीमारियों से संबंधित चिकित्सा, निदान या रोकथाम हेतु चमत्कारी दवा से संबंधित विज्ञापनों पर अभी प्रतिबंध है। इस वैधानिक स्थिति के बावजूद कैंसर, बहरापन, मधुमेह, बन्ध्यापन, नाड़ीतंत्र, पौरुष-ठांथि, मिर्गी, पथरी, गेंगरीन, लकवा, कुष्ठ, मोटापा, अस्थि-रोग, नामर्दगी, यक्ष्मा आदि जैसी अनेक बीमारियों के बारे में टेलीविजन, अखबार एवं सोशल मीडिया में चमत्कारी दावे आज भी किये जाते हैं। इनसे सावधान रहना आवश्यक है। रामबाण शब्द का हिंदी में प्रयोग देखने पर गूगल सर्च में 7.82 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। अंग्रेजी में मैजिक और आयुर्वेद खोजने पर लगभग 9.0 लाख सन्दर्भ आते हैं। इसी प्रकार रामबाण इलाज के 2.92 लाख सन्दर्भ, रामबाण दवा के 1.29 लाख सन्दर्भ, और रामबाण आयुर्वैदिक दवा के 1.36 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। यदि चमत्कार एवं आयुर्वेद खोजें तो 1.34 लाख सन्दर्भ मिलते हैं। इसके विपरीत, प्रमाण-आधारित आयुर्वैदिक चिकित्सा या आयुर्वेद के मैजिक की साइंस खोजने पर 200 के अन्दर सभी सन्दर्भ सिमट जाते हैं। आयुर्वेद में चमत्कार किये जाने के दावे उन रोगों के लिये तो हैं ही जिन्हें असाध्य माना जाता है, परंतु बूढ़े को जवान बनाने, गोरा रंग व सुदर्शन काया प्राप्त करने, और नामर्द में मर्दानगी बढ़ाने के चमत्कारिक नुस्खे भी कोई कम नहीं हैं।

समस्या का केवल एक ही निदान है कि आप ऐसी जानकारी पर भरोसा कर लेने के बजाय उत्तम आयुर्वेदाचार्य की सलाह लीजिये। ख्याल रखिये, जिन लोगों द्वारा चमत्कार के दावे किये जाते हैं, उनका प्रायः आयुर्वेद से धन कमाने के अतिरिक्त और कोई लेना-देना नहीं रहता है। वैसे तो शिक्षा के प्रसार के साथ ऐसे दावों के प्रति आमजन में संदेह और सजगता बढ़ी है, लेकिन इस व्यक्तिगत संदेह ने समूची आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को ही संदेहास्पद बनाना शुरू कर दिया है।

वास्तविकता को तीन स्तरों पर देखा जाना आवश्यक है। पहली बात यह है कि आयुर्वेद की मूल संहिताओं में चमत्कारिक चिकित्सा जैसा कोई पाठ पढ़ने में नहीं आता। दूसरा, आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों में भी इस प्रकार के हाथों-हाथ चमत्कार का कोई प्रमाण नहीं मिलता। और, अंतत: आयुर्वेदाचार्यों के अनुभवजन्य-ज्ञान में भी चमत्कार के कोई लिखित व शोधपरक प्रमाण नहीं मिलते, भले ही उनमे से कुछ ने इस शब्द को त्रुटिवश बार-बार उपयोग करने की आदत डाल ली हो।

आयुर्वेद में सबसे पुराने ग्रन्थ चरकसंहिता एवं सुश्रुतसंहिता की भाषायी व्यवस्था प्राय: आधुनिक काल के वैज्ञानिक शोध-पत्रों की तरह संयमित एवं मर्यादित है। यही बात आचार्य वाग्भट के अष्टांगहृदयपर भी लागू होती है। यहां तक की 13वीं शताब्दी में लिखी गई शारंगधरसंहिता या बाद के काल में आचार्य चक्रपाणिदत्त द्वारा लिखे गये चिकित्सा ग्रन्थ चक्रदत्त में कहीं-कहीं भाषायी अलंकार अवश्य परिलक्षित होता है, तथापि चमत्कार जैसे शब्दों से उन्होंने भी उचित और सम्मानजनक फ़ासला बनाये रखा। संहिताओं के ऐसे श्लोक, जो चमत्कार के नजदीक जाते हुये परिलक्षित होते हैं, वे भी हमारे द्वारा भाषा की समझ के फेर के कारण ही होगा, अन्यथा संहिताओं के प्रत्येक योग का विस्तृत वर्णन एवं संबंधित औषधि की फलश्रुति में चमत्कार शब्द का प्रयोग नहीं हुआ। इनमें रोग-निदान एवं चिकित्सा, आहार-विहार, रसायन एवं औषधि के साथ पथ्य-अपथ्य का विस्तृत वर्णन मिलता है। चरकसंहिता के संपूर्ण चिकित्सा स्थान और उस पर दिग्गज आचार्यों जैसे चक्रपाणि, गंगाधर आदि द्वारा की गई टीकाओं में भी चमत्कार शब्द के दर्शन नहीं होते हैं। इनमें चिकित्सकीय योगों और औषधियों, उनसे जुड़ी संपूर्ण जानकारी तथा प्रभाविता के लिये तुलनात्मक जानकारी का ऐसा वर्णन है जिन्हें आज भी विज्ञान-सम्मत माना जाता है। संहिताओं में तो इस हद तक सावधानी बरती गई है कि जिन प्रकरणों में अतिशयोक्ति अलंकार है, उनमें आचार्यों ने प्राय: ऐसा इंगित भी कर दिया है या सुनी-सुनाई होने का संकेत कर दिया है। यहाँ तक कि भैषज्य रत्नावली नामक ग्रन्थ में जहाँ एक योग का नाम रामबाण रस है, उपमा के बावज़ूद उसका वर्णन भी तार्किक और मर्यादित है।

इन परिस्थितियों में ध्यान रखने योग्य सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आयुर्वेद आयु का विज्ञान है, चमत्कार नहीं। आयुर्वेदिक औषधियां भी अचूक, रामबाण या चमत्कारिक नहीं बल्कि वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुरूप ही प्रभावी या उपयोगी होती हैं। वस्तुत: आयुर्वेद एक प्रमाण-आधारित, विस्तृत, प्रभावी, समग्र और संपूर्ण चिकित्सा पद्धति है जिसके द्वारा स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा और रोगी का रोगोपचार होता है।

आयुर्वेद आयु का विज्ञान है, आय का नहीं। पर समय तेजी से बदल रहा है, और यह आयुर्वेद के लिये अच्छा ही है, बशर्ते बात प्रमाण-आधारित आयुर्वेद की हो रही हो। बात यदि भयंकर से भयंकर एसिडिटी चुटकी बजाते ही गायब कर दिये जाने की हो तो इसे झांसेबाज़ी ही समझिये। प्राचीन भारतीय साहित्य का सहारा लें तो यह कहना समीचीन होगा कि रामबाण केवल रामजी के पास ही है, और उसका प्रयोग भी केवल उन्ही के बस की बात है। औषधियों के चमत्कारी प्रभाव का दुष्प्रचारी दावा प्रमाण-आधारित आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति की वैज्ञानिकता और विश्वसनीयता का सबसे बड़ा दुश्मन है। लोगों को स्वविवेक का प्रयोग करते रहना चाहिये और किसी बहकावे में नहीं आना चाहिये। आयुर्वेद को चमत्कार नहीं, अपितु विशिष्ट विधियों एवं सिद्धांतों से युक्त एक उत्कृष्ट चिकित्सा विज्ञान समझने में ही व्यक्ति, समाज और अर्थव्यवस्था की भलाई है।

समस्या असली आयुर्वेदाचार्य को छाँटने की भी कम नहीं है। किसी भी शहर में वास्तविक और असली बैचलर ऑफ़ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी की उपाधि वाले आयुर्वेदाचार्यों के अलावा विविध उपाधियों के बोर्ड लगे वैधजी, वैध्यजी, वेदकाचार्य, वेदजी, वेधजी आदि भी खूब फल-फूल रहे हैं। ये सब छद्मायुर्वेदाचार्य हैं। ऐसी स्थिति में ध्यान रखिये, विधिवत आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त बेचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसन एंड सर्जरी, मास्टर आफ आयुर्वेदिक मेडिसिन, आयुर्वेद में डॉक्टर ऑफ फिलोसफी जैसी उपाधियाँ ही मान्य हैं। वास्तविक और मान्य उपाधियों से रहित कोई भी व्यक्ति चिकित्सा करता है तो वह चिकित्सकीय दुष्कर्म है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

चुनौती बनते साइबर हमले

अविनाश जोशी

आज इंटरनेट हमारे दैनिक जीवन के अभिन्न अंगों में से एक बन गया है। वह हमारे दैनिक जीवन के अधिकांश पहलुओं को प्रभावित कर रहा है। साइबरस्पेस हमें वर्चुअल रूप से दुनिया भर के करोड़ों ऑनलाइन उपयोगकर्त्ताओं से जोड़ता है। हमारी जिंदगी के कई महत्वपूर्ण फैसले एवं दस्तावेज कंप्यूटर में संग्रहित रहते है। हमारा पूरा वित्त संबंधित लेखा-जोखा भी ऑनलाइन ही संग्रहित हैं।

साइबर स्पेस हमारे जीवन की आधार रेखा है इसलिए साइबर सुरक्षा एक महत्वपूर्ण घटक साबित हो सकता है। साइबर सुरक्षा कंप्यूटर, सर्वर, मोबाइल डिवाइस, इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम, नेटवर्क और डेटा को दुर्भावनापूर्ण हमलों से बचाने का माध्यम है। इसे सूचना प्रौद्योगिकी सुरक्षा या इलेक्ट्रॉनिक सूचना सुरक्षा के रूप में भी जाना जाता है। यह शब्द व्यवसाय से लेकर मोबाइल कंप्यूटिंग तक विभिन्न संदर्भों में लागू होता है। नेटवर्क सुरक्षा कंप्यूटर नेटवर्क को घुसपैठियों से सुरक्षित करने का तरीका है, चाहे लक्षित हमलावर हों या अवसरवादी मैलवेयर।

आज विश्व में साइबर खतरा तीव्र गति से विकसित हो रहा है, हर साल डेटा उल्लंघनों की संख्या बढ़ रही है। रिस्कबेस्ड सिक्योरिटी की एक रिपोर्ट से पता चला है कि अकेले 2019 के पहले नौ महीनों में डेटा उल्लंघनों से चौंकाने वाले 7.9 बिलियन रिकॉर्ड उजागर हुए थे। यह आंकड़ा 2018 की समान अवधि में उजागर हुए रिकॉर्ड की संख्या से दोगुने (112 प्रतिशत) से भी अधिक थे।

चिकित्सा सेवाओं, खुदरा विक्रेताओं और सार्वजनिक संस्थाओं ने सबसे अधिक उल्लंघनों का अनुभव किया, अधिकांश घटनाओं के लिए दुर्भावनापूर्ण अपराधी जिम्मेदार थे। इनमें से कुछ क्षेत्र साइबर अपराधियों के लिए अधिक आकर्षक हैं क्योंकि वे वित्तीय और चिकित्सा डेटा एकत्र करते हैं, लेकिन नेटवर्क का उपयोग करने वाले सभी व्यवसायों को ग्राहक डेटा, कॉर्पोरेट जासूसी या ग्राहक हमलों के लिए लक्षित किया जा सकता है।

साइबर खतरे का स्तर लगातार बढ़ने के साथ, साइबर सुरक्षा समाधानों पर वैश्विक खर्च स्वाभाविक रूप से बढ़ रहा है। ऐसा अनुमान है कि साइबर सुरक्षा का खर्च 2026 तक वैश्विक स्तर पर 260 बिलियन डॉलर से अधिक हो जाएगा। दुनिया भर की सरकारों ने संगठनों को प्रभावी साइबर-सुरक्षा प्रथाओं को लागू करने में मदद करने के लिए मार्गदर्शन के साथ बढ़ते साइबर खतरे के प्रति जागरूकता पे ध्यान दिया है।

अमेरिका में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्टैंडर्ड्स एंड टेक्नोलॉजी ने एक साइबर-सुरक्षा ढांचा बनाया है दुर्भावनापूर्ण कोड के प्रसार से निपटने और शीघ्र पता लगाने में सहायता के लिए, रूपरेखा सभी इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की निरंतर, वास्तविक समय की निगरानी की सिफारिश करती है। यूके सरकार के राष्ट्रीय साइबर सुरक्षा केंद्र द्वारा प्रदान किए गए मार्गदर्शन, 'साइबर सुरक्षा के लिए 10 कदम' में सिस्टम निगरानी के महत्व को प्रतिध्वनित किया गया है। ऑस्ट्रेलिया में, ऑस्ट्रेलियाई साइबर सुरक्षा केंद्र नियमित रूप से इस बारे में मार्गदर्शन प्रकाशित करता है कि संगठन नवीनतम साइबर-सुरक्षा खतरों का मुकाबला कैसे कर सकते हैं।

साइबर आक्रमण या साइबर हमला एक प्रकार का अपराध है जो कंप्यूटर के माध्यम से किया जाता है। इसे अंग्रेज़ी भाषा में साइबर अटेक कहते हैं। सामान्यत: साइबर आक्रमण का संचालन अनामक संस्थाओं या व्यक्तिओं द्वारा महत्त्वपूर्म डाटा की चोरी करने के लिये किया जाता है। साइबर सुरक्षा कंप्यूटर सिस्टम, नेटवर्क, डिवाइस और डेटा की चोरी, क्षित, अनधिकृत पहुँच या किसी भी प्रकार के दुर्भावनापूर्ण इरादे से बचाने की प्रथा है।

साइबर सुरक्षा महत्वपूर्ण है क्योंकि सरकार, सैन्य, कॉर्पोरेट, वित्तीय और चिकित्सा संगठन कंप्यूटर और अन्य उपकरणों पर अभूतपूर्व मात्रा में डेटा एकत्र, संसाधित और संग्रहीत करते हैं। उस डेटा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा संवेदनशील जानकारी हो सकता है, चाहे वह बौद्धिक संपदा, वित्तीय डेटा, व्यक्तिगत जानकारी, या अन्य प्रकार का डेटा हो, जिसके लिए अनधिकृत पहुंच या प्रदर्शन के नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। संगठन व्यवसाय करने के दौरान नेटवर्क और अन्य उपकरणों पर संवेदनशील डेटा प्रसारित करते हैं, और साइबर सुरक्षा उस जानकारी और इसे संसाधित करने या संग्रहीत करने के लिए उपयोग की जाने वाली प्रणालियों की सुरक्षा के लिए समर्पित अनुशासन का वर्णन करती है। जैसे-जैसे साइबर हमलों की मात्रा और परिष्कार बढ़ता है, कंपनियों और संगठनों, विशेष रूप से जिन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा, स्वास्थ्य या वित्तीय रिकॉर्ड से संबंधित जानकारी की सुरक्षा का काम सौंपा जाता है, उन्हें अपने संवेदनशील व्यवसाय और कर्मियों की जानकारी की सुरक्षा के लिए कदम उठाने की आवश्यकता होती है। कुछ वर्षों पहले देश के शीर्ष खुफिया अधिकारियों ने आगाह किया था कि साइबर हमले और डिजिटल जासूसी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा हैं, यहाँ तक कि आतंकवाद भी।

जागरूकता एवम शिक्षा साइबर-अपराधों की रोकथाम के बारे में सूचना के प्रसार के लिये महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है और युवा आबादी साइबरस्पेस में अपनी भागीदारी के बारे में जागरूक होने तथा साइबर सुरक्षा के लिये और साइबर अपराध रोकने के लिये एक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करने के लिये बल गुणक के रूप में कार्य कर सकती है। साइबर सुरक्षा जागरूकता का मतलब यह है कि साइबर सुरक्षा के बारे में उपयोगकर्ताओं को कितना पता है कि उनके नेटवर्क को खतरा है और वे जो जोखिम पेश करते हैं। अंतिम उपयोगकर्ताओं को एक नेटवर्क के भीतर सबसे कमजोर लिंक और प्राथमिक भेद्यता माना जाता है। संगठन अपने नेटवर्क को बाहरी खतरों से बचाने और कमजोरियों को कम करने के लिए धन आवंटित करते हैं। अंत उपयोगकर्ता होने के नाते एक बड़ी भेद्यता है, सुरक्षा में सुधार करने के लिए तकनीकी साधन पर्याप्त नहीं हैं: संगठनों को साइबर सुरक्षा की व्यक्तिगत जागरूकता के लिए प्रशिक्षण भी देना चाहिए। उन्हें वर्तमान खतरों पर कर्मचारियों को शिक्षित करना चाहिए और उनसे कैसे बचना चाहिए।

अभी कुछ समय पहले आस्ट्रेलिया, भारत, जापान और अमेरिका का औपचारिक समूह 'क्वाड' साइबर सुरक्षा बढ़ाने के लिए 'मशीन लर्निंग' और संबंधित आधुनिक प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने पर सहमत हो गए हैं एवम आने वाले समय में साइबर सुरक्षा पे मिल के कार्य करेंगे। साइबर क्राइम से निपटने के लिए लगातार नए कदम उठाए जा रहे हैं। ए आई चेट बोट की मदद से अब पुलिस केस निपटाएगी और लगातार इसको लेकर कदम भी उठाए जा रहे हैं। आप भी इसका आसानी से लाभ उठा सकते हैं।

साइबर फ्रॉड के मामलों से बचने के लिए सरकार और सरकारी तंत्र अलग-अलग तरीके अपना रहा है। यूजर्स को भी समय समय पर इससे होने वाले खतरों से अवगत करवाया जाता है। साथ ही इससे बचने के तरीके भी बताए जाते हैं।

भारत में 2023 में लगभग 85 लाख उपकरणों पर 40 करोड़ से अधिक साइबर हमले हुए हैं। यानी हर मिनट 761 साइबर हमले हुए। इनमें से सूरत में 15 फीसदी और बंगलूरू में 14 फीसदी सबसे अधिक मामले देखे गए हैं। इनमें से 50 फीसदी से अधिक मीडिया और नेटवर्क ड्राइव से जुड़े हैं।

सुरक्षा उपायों में असमानता से वैश्विक स्तर पर साइबर खतरे बढ़ रहे है। यह दावा विश्व आर्थिक मंच ने ग्लोबल साइबर सिक्युरिटी आउटलुक 2024 जारी रिपोर्ट में किया है। एक्सेंचर के सहयोग से तैयार की गई रिपोर्ट में गलत जानकारी फैलाने या सार्वजनिक धारणा में हेरफेर करने के लिए एआई जनित डीपफेक से उत्पन्न खतरों को चिह्नित किया गया है। इसके साथ ही बताया गया है कि पिछले वर्ष की तुलना में दुनिया के 10 में 8 कारोबार साइबर सुरक्षा के लिहाज से ज्यादा असुरक्षित महसूस करने लगे हैं। यह रिपोर्ट तब सामने आई है, जब दुनिया के 45 से ज्यादा देशों में चुनाव होने वाले हैं।

साइबर क्राइम से जुड़े ज्यादातर मामले एक्ट 2000 के तहत दर्ज किए जाते हैं। इसमें अपराधी के द्वारा किए गए क्राइम की श्रेणी तय की जाती है और उसके अनुसार आरोपी के खिलाफ एक्शन लिया जाता है। कई मामलों में अपराधियों के खिलाफ धारा 43, 65, 66 और 67 के तहत केस चलते हैं।

भारत को व्यापक और अद्यतन कानून बनाने की आवश्यकता है जो साइबर सुरक्षा के सभी पहलुओं, जैसे साइबर आतंकवाद, साइबर युद्ध, साइबर जासूसी और साइबर धोखाधड़ी को दायरे में ले।

–अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

झुंझुनूं के लक्ष्मीनाथ मंदिर में 106 साल से सहेजा जा रहा है बारिश का पानी

झुंझुनूं, (निसं)। सैकड़ों वर्ष पहले शेखावाटी क्षेत्र की सूखी धरती पर, जहां पानी की किल्लत आम है, झुंझुनूं शहर का 106 साल पुराना श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर एक ऐसी विरासत का प्रतीक है, जहां आस्था और पर्यावरण संरक्षण का अनूठा मेल देखने को मिलता है। यह मंदिर सदियों पुरानी जल संचयन की पारंपरिक तकनीकों को आज भी जीवित रखे हुए हैं। मंदिर परिसर में बने विशाल कुंड में एकत्र बारिश का पानी भगवान के अभिषेक, भोग तैयार करने और मंदिर के अन्य नित्य कर्म में इस्तेमाल किया जाता है। यह प्रथा न केवल पुरखों की दूरदर्शिता को दर्शाती है, बल्कि आज के जल संकट के दौर में एक सबक भी देती है।

- **लक्ष्मीनाथ मंदिर जल संरक्षण का अनूठा उदाहरण, इसी पानी से भगवान का अभिषेक और भोग होता है**
- **शेखावाटी में वर्षों पहले बने धार्मिक स्थलों में बनाए गए वाटर स्ट्रक्चर आज भी पानी बचा रहे हैं**

मंदिर परिसर में बना कुंड मंदिर की छत से बारिश का पानी नालियों के जरिए एकत्र करता है।

शेखावाटी में वर्षों पहले बने धार्मिक स्थलों में बनाए गए वाटर स्ट्रक्चर आज भी पानी बचा रहे हैं। इससे साबित होता है कि पानी के मोल को हमारे पुरखों ने बहुत अच्छे से जान लिया था। झुंझुनूं शहर में पुराना पोस्ट ऑफिस के पास स्थित 106 साल पुराने लक्ष्मीनाथ मंदिर में बरसात के पानी से ही भगवान का भोग लगाया जाता है। यहां छत के पानी को नालों से होते हुए मंदिर के नीचे बनाए कुंड में एकत्रित किया जाता है। इस पानी का उपयोग भगवान का भोग बनाने, भगवान को स्नान करवाने के काम में लेते हैं। इसके अलावा मंदिर पुजारी सभी धार्मिक प्रक्रिया, साफ-सफाई व बागवानी में काम लेते हैं। इस मंदिर में भगवान लक्ष्मीनारायण के साथ राम परिवार की प्रतिमाएं व शिव परिवार स्थापित है।

मंदिर के व्यवस्थापक रघुनाथ प्रसाद शर्मा ने बताया कि हिंदी वर्ष 1972 मंदिर की नींव रखी गई थी। मंदिर का निर्माण पूरा होने में करीब चार साल लगे। मंदिर निर्माण के साथ ही लगभग 20 हजार लीटर क्षमता वाले भूमिगत कुंड का निर्माण भी करवाया गया, जो आज तक मानसून के पानी को संजोए हुए है। मंदिर के व्यवस्थापक रघुनाथ प्रसाद शर्मा बताते हैं कि यह कुंड मंदिर की छत से बारिश का पानी नालियों के जरिए एकत्र करता है। इस पानी का इस्तेमाल केवल धार्मिक कार्यों में होता है, क्योंकि इसे शुद्ध और दैवीय माना जाता है। श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर में 106 साल पुराने कुंड का बारिश का जल आज भी भगवान की दिनचर्या का आधार बना हुआ है। मंदिर के पुजारी कृष्ण व्यास द्विवेदी ने बताया कि इस कुंड में संग्रहित वर्षा जल से ही भगवान लक्ष्मीनाथ के स्नान, पूजा-अर्चना और भोग तैयार किए जाते हैं। दिनभर में सात बार की जाने वाली आरती और प्रसाद की तैयारी भी इसी जल से होती है। सुबह भगवान के स्नान से रोजाना के नित्य कर्म की शुरुआत होती है। दिन में सात बार पूजा अर्चना सात बार भोग मंदिर में स्थापित कुंड के पानी से ही किया जाता है। मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं को इसी पानी के पंचामृत दिया जाता है। पुजारी कृष्ण व्यास द्विवेदी ने बताया कि झुंझुनूं शहर के अन्य धार्मिक आयोजनों में भी यहाँ के कुंड से जल ले जाया जाता है। उन्होंने बताया कि सुबह भगवान के स्नान से दिन की शुरुआत होती है और संध्या आरती तक सभी रीति-रिवाज इसी जल से पूरे होते हैं।

झुंझुनूं का लक्ष्मीनाथ मंदिर एक धार्मिक स्थल की नहीं, बल्कि जल संरक्षण के साथ पर्यावरण और संस्कृति के साथ सामंजस्य बिठाने की प्रेरणा है। यह परंपरा न केवल जल संरक्षण का संदेश देती है, बल्कि शेखावाटी की जल संचयन की ऐतिहासिक विरासत को भी जीवित रखे हुए है। मंदिर प्रशासन का कहना है कि कुंड का पानी कभी खत्म नहीं होता, क्योंकि वर्षा जल के संग्रहण और उपयोग का चक्र सदियों से चला आ रहा है।

आरटीई एडमिशन के लिए शेड्यूल जारी

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा के अधिकार कानून के तहत प्रदेश के प्राइवेट स्कूल में फ्री पढ़ने के लिए अभिभावकों को 25 मार्च से ऑनलाइन आवेदन करना पड़ेगा। शिक्षा विभाग ने आरटीई सीट्स पर एडमिशन के लिए शिड्यूल जारी कर दिया है। नौ अप्रैल को आवेदन करने वाले स्टूडेंट्स की लॉटरी जारी हो जाएगी और इसके बाद डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन करवाना होगा।

प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक ने शनिवार को जारी शिड्यूल में बताया है कि प्रदेश के सभी प्राइवेट स्कूल्स को 24 मार्च तक अपनी प्रोफाइल अपडेट करनी होगी। इसके बाद 25 मार्च से सात अप्रैल तक अभिभावक अपने बच्चों को एडमिशन दिलाने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। ये काम किसी भी ई-मित्र की सहायता से या फिर अपने स्तर पर अभिभावक कर सकेंगे। नौ अप्रैल को एनआईसी की ओर से लॉटरी जारी की जाएगी। नौ से पंद्रह अप्रैल के बीच अभिभावकों को संबंधित स्कूल में अपने डॉक्यूमेंट जमा करवाने होंगे। अगर वो चाहे तो इसी अवधि में विद्यालय चयन के क्रम को बदलवा भी सकता है। इसके बाद नौ अप्रैल से 21 अप्रैल तक प्राइवेट स्कूल आवेदन पत्रों के साथ उपलब्ध कराए गए कागजात की छानबीन करेंगे। 22 अप्रैल को एनआईसी इन सभी आवेदनों को ऑटो वेरिफाई करेगा। अभिभावक की ओर से पूर्व में दिए गए दस्तावेजों में भी नौ अप्रैल से 24 अप्रैल तक परिवर्तन और सुधार करवाया जा सकता है। 28 अप्रैल तक संबंधित प्राइवेट स्कूल सभी आवेदन पत्रों की फिर से जांच करेंगे। पांच मई तक सीबीईओ उन आवेदन पत्रों की जांच कर सकेंगे, जिन्हें स्कूल ने रिजेक्ट कर दिया है। आवेदन करने के बाद नौ मई को संबंधित स्कूल में उपलब्ध सीट्स के आधार पर चयन की पहली लिस्ट एनआईसी की ओर से जारी की जाएगी।

राशिफल रविवार 23 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 4:18 तक, वारियान योग सायं 5:58 तक, तैतिल करण सायं 5:37 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भगवान आदिनाथ जयन्ती और तप कल्याणक दिवस (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:32 से 11:03 तक, लाभ-अमृत 11:03 से 2:03 तक, शुभ 2:03 से 3:33 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:32, सूर्यास्त 6:36

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

सिंह
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकता है। आज नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कन्या
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

मकर
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

तुला
परिवार में मन